नांदीमुखश्राद्धानन्तरं आचार्यादि वरोपण विधिः
वरणं कुं० आचार्यादीनां वरण लम्बोदरी पृ० २ पर है
नांदीमुखश्राद्ध के बाद आचार्यादि का वरण करना पृ० १३

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ वापीकूपतडागा-
राम प्रतिष्ठाविधिः ॥ तत्रादौ प्रथमदिने

कृत्यम् ॥ प्रथमं नान्दीमुखश्राद्धं कृत्वा तद
नन्तरं ब्राह्मणानां वरणं कलशस्था
पनं नवग्रहपूजनादिकं च कुं० ॥ प्रथ
मं स्वस्तिवाचनम् कर्तव्यम् तदनन्तरं प्र
तिज्ञासंकल्पं कुं० ॥ देशकालौ संकीर्त्य
अमुकगोत्रोहं अमुकशर्माहं ... तडा
कूपेऽस्मिन् देवकलासान्निध्यार्थं आ
युः श्री सर्वफलाप्त्यर्थं सुखकामः इष्ट
र प्रीतिकामो वा ॥ अत्र जपगायत्री गणे
श गायत्री वरुण मंत्र वास्तु मंत्राणां स
पादलक्ष अथवा साईद्विषष्ठी सहस्र
संख्याक अथवा सपादैकत्रिंशत्सह
स्र संख्याक जपं कारयितुं ब्राह्मणादि
वरणं करिष्ये समये निवृत्ति ... न
सर्वत्र हर्षानन्द जपफलप्राप्त्यर्थं चा
आदौ गणपत्यादि देवानां षोडशोपचारै
हं पूजनं करिष्ये ॥ अथ गणपति पूजा

प्रतिष्ठा प्रकाश ग्रंथ में कूप तडाग दो सोडश
चक्राकार न्याय ... है इसी ग्रंथ में भी

रक्षा मूल जाप संकल्प ... ... न स्वर रुद्राव धनैतिलक ... प्रार्थना ॥ १३ | फेर औप्यग्निदि हं लम्बो दरी मे पत्र २० पर है

... पति पूजन लम्बोदरी होम पद्धति
मे पत्र ५ से प्रारंभ हुवा पत्र ८ तक सम
पूर्ण ॥ फेर पञ्चोपचार पूजन कात्यायनी श्रुति
के अनुसार करणा ॥ ततः औप्यग्निदि हं
ततः कलश प्रतिष्ठा ॥ कलश प्रतिष्ठा
लम्बोदरी पद्धति मे पत्र ११ से पत्र १३ त
क है ॥ फेर वास की पूजन ॥ ततः षष्ठी
कात्यायनी पूजन यह कात्यायनी से कर
णा ॥ ततः स्वग्निदि नव ग्रह पूजन
यह लम्बोदरी पद्धति से करणा स्वग्नि
दि नवग्रह पूजन लम्बोदरी मे पत्र
१३ से पत्र २३ तक है ॥ फेर रुद्रा विधान कुं०
कात्यायनी से ॥ ततः प्रार्थना कुं० ॥ इति प्रथ
म दिन कृत्यम् ॥ अथ हवन दिन
कृत्यम् ॥ अथ मं स्वस्ति वाचनं कृत्वा
प्रतिज्ञा संकल्पं कुं० ॥ देश कालौ सं
कीर्त्य अमुक गोत्रो ह अमुक शर्मा
ह ज्योतिष्टोमा कूपे ऽस्मिन्द्देव कला

ब्राह्मणों के वरण का संकल्प जापका संकल्प इसी प्रकार करे

सान्निध्यार्थं प्रा. पू: श्री सर्वकला
दाप्यसुखका मं॰ इच्छ स्त्री प्रीतिका
मो वा कूप प्रतिष्ठां करिष्ये तदङ्ग
त्वेन तन्निर्विघ्न परि समाप्ति पू
र्वकं प्रादौ गणपत्यादि देवान्यो
पचारै रहं पूजयिष्ये ॥१॥ यह कू
प प्रतिष्ठा तडाग वापी का संकल्प
है ॥ आराम बाग के वै नामें न
का प्रतिष्ठा संकल्प यह है ॥ प्रथ
क जो त्रो है प्रथम कथर्मो है ॥ ताकं वा
प्रम स्वः कर्तव्या ॥ आराम प्रतिष्ठा निर्वि
घ्न परि समाप्ति कामः इन्द्रायुत त्रै
यकाल व्याप्ति स्वर्गवास मद्भुत भव्या
स्वरोम सम संख्या स्ववंश मनुष्य
तारण पुनरावृत्ति दुर्लभ पद प्रा
राम सिद्धि प्राप्ति कामो ॥ आराम प्रति
ष्ठां करिष्ये तदङ्ग त्वेन तन्निर्विघ्नपरि

वास्तु पूजन लम्बोदरी मे पत्र ८ से प्रा
रंभ हुवा है प० १० तक समाप्त ॥ १५

सपत्नीक पूर्वे कृत्वा आदौ गणपत्यादि
देवानां पंचोपचारैः पूजनं विधेः
ततः पूर्ववत् गणपति पूजनम् ॥
पत्न्यो वाक्य पूजनं ॥ गौर्यादि षोडश
मातृ पूजनं ॥ कलश पू० वास्तु की पू०
चतुःषष्ठी यो० पूजनं ॥ कर्तव्यम् ॥
ततः सूर्यादि नवग्रह लोक पूजनम्
कर्तव्यम् ॥ ततः ध्वजा पताकादीनां पूर्व
स्तंभादीनां पूजा कार्या ॥ ध्वजा पताका पूजन नवग्रह
लिखित को पुस्तक मे वापी कूप प्रतिष्ठा पद्धति
मे पत्र २ से पूर्ण पुस्तक है ॥ कूपारोपण विधिः
उस से प्रवृत्ती
[illegible] मे पत्र ७ पर है ॥ ततः नैऋते
उस मे पद्धति सेकरावना
वास्तु मण्डप पूजा कर्तव्या ॥ वास्तु मण्डप पू
जन रामलाल कृत सर्व देव प्रतिष्ठा संग्रह
मे से करावणा ॥ सर्वतो भद्र पूजन वो ईशी
पद्धति से करणा ॥ यह सब पूजन करके
पश्चात् कुशण्डि कृत्य करणा ॥ पंचभू
संस्कार लम्बोदरी मे पत्र १३ से आरंभ पत्र
१३ के ६ ऊपर समाप्त होगया फेर कुशण्डि
पत्र २३ से आरंभ हुवा है पांच कुशण्डि तक

ध्वजस्तंभ स्थापन मे स्थापन करणा ॥ | सर्वतोभद्र पूजन ना लिखी है वो नवपद्धति मे पत्र १४ पर आरंभ है।

कालश्रंगतिके पत्र १५ वा १६ पर स्रत्र खेवेश न करने के मंत्र लि० है

यह नाग यष्ठ्या रोपण विधिः उत्सर्ग पद्धति मे वी प० २१ पर है यह कूप वापी मे नही करना

ने यह सभ कृत्य पत्र ३२ पर समाप्त होगया ॥ हवन के वरण का संकल्प वेद का संकल्प करके फेर हवन का लक्षण करे ॥ फेर त्रिवृत मंगल सूत्र से जलाशय को कूपा राम को वेष्टन करे फेर कूप को स्नानं करावे पंचगव्य से स्नान विधि [illegible] मे पत्र २३ से प्रारंभ होता पत्र २४ तक समाप्त ॥ पत्र २१ पर गंगादि तीर्थों का जल कूप मे गेरणा ॥ फेर पत्र २० पर मत्स्य कूर्म मकर नाम मनाकु मिंडक द्वीप मार गेरणे कूप मे ॥ फेर नाग स्तोरो पण विधिः [illegible] लिखत का वापी कूप प्रतिष्ठा पद्धति मे पत्र ११ पर है ॥ पंच रत्न जल मे गेरणा वी ईसी पद्धति मे पत्र ११ पर है । उत्सर्ग फेर यजमान को तर्पण करणा वापी कुण पद्धती मे पत्र १८ से प्रारंभ बावो रागि के मंत्रो कर के वी लिखा है प० १८ से प्रारंभ ॥ जो दान वी ईसी पद्धति पत्र २० पर समाप्त ॥ फेर ~~[illegible]~~ के पत्र २० पर है

५ कलशों मे काकरे के (interlinear)

उत्सर्ग पद्धति (interlinear)

लिखत (interlinear)

सम्पादन प० २२ पर है उत्सर्ग पद्धति मे

उत्सर्ग पद्धति मे

५ कलशों मे सर्वौषधी मिश्रित जल पाकर [illegible] के पंचगव्य सप्तमृत्तिका कूप स्थ [illegible] जल पाकर के कूप को स्नान करावना

तिप्र वा जप ओ मे पत्र १५ वा १६ प २६ ९८४

लम्बोदरी के मे पहु तिमे दृप्रादि के मा
ल वे. लि: पत्र ३३ से प्रारंभ पत्र ३६
पर समाप्त॥ फेर जप की दक्षिणा का
संकल्प हवन दक्षिणा का संकल्प कर
णा॥ गोदान॥ शय्या दान॥ शिल्पी पूजन
शिल्पी को दक्षिणा इनाम देणा वा है को
देणा और पुरोहित को आश्रित को दक्षि
णा देणी॥ धातु पात्र दान॥ अन्न दान॥
तैल दान ग्रह करणा फेर पूर्णाहुति
देली॥ [redacted] पत् सम कृत्य
लम्बोदरी मे पत्र ३८ तक समाप्त॥
फेर जलाशयो का उत्सर्ग करना दान का संकल्प क
उत्सर्ग कर्म
रणा [redacted] मे पत्र ५१ पर प्रारंभ हु वापि
तिवापी कूप तडाग प्रतिष्ठा समाप्त॥ अथ स
मप्रति वा कूप प्रतिष्ठा की तरह होती है
प्रथम दिन कृत्य कूप प्रतिष्ठा की तरह
करणा॥ प्रथम स्वस्तिवाचन॥ फेर प्रति
ष्ठा संकल्प॥ फेर गणपत्यादि ग्रहो
का पूजन॥ कलश प्रतिष्ठा समाप्त

पह कूपी दि को के कूप मे. गर ले

जनकरके॥ फेर ब्राह्मणों के वरणका
संकल्प जपका संकल्प करणा फेर
रक्षाबंधन शांति लके॥ आशीर्वाद दे यजमा
नको यह कृत्य प्रथम दिन करणा॥ फेर
हवन दिं प्रतिष्ठा के दिन कूप प्रतिष्ठा की
तरह॥ प्रथम स्वस्तिवाचन॥ फेर प्रति
ज्ञा संकल्प॥ फेर गणपत्यादि ग्रहोंका
पूजन करके॥ फेर ध्वजा पताका वंदरवा
ल क्षेत्रपाल भैरवका पूजन करणा॥ फेर वा
स्तु मंडप पूजा सर्वतोभद्र मंडप पूजा ध
[illegible] करणा॥ फेर कुशकंडी करके ह=
हकृत्य करे॥ ब्राह्मण हवन करे॥ आ
वन करणा॥ यजमान से सभ वृक्षों
चाहिये जो है सो यजमान ने सभ वृक्षों
के नीचे मूल में एक एक कलशा जलका
भरकर रखणा उसमें एक एक पैसा एक एक
लाल [illegible] धप हमेरणे उसमें
ला आम्र इत्यादि पुष्प गंध धूप है
की धूप देणी॥ जितने वृक्ष हों उतने वस्त्र
एक एक वस्त्र वृक्ष के ऊपर ढांकणे श्वेत वस्त्र॥
जो सभ वृक्षों के मूल में कलश रखे न हि
रखे तो और सभ का यह कृत्य न होके

रेतो॥ ८ वृक्षों के निचे तो अवश्यही ८
कलशरे जल के भर कर रखणे सभ मे पसा
ताग अक्षत पुष्प गंध धूप गुग्गल देणी॥
॥ श्रोर सभ वृक्षों को तीर्थों के जल से पंच
गव्य श्रोर सर्वौषधी मिश्रित जल से॥
स्नान करावणा॥ सभ को वाढ को वस्त्र
उढावणा गंध पुष्प धूप दीप से पूजन
करणा॥ सभ वृक्षों के नीचे सप्तधान्य
का एक एक उंजला भरके गेरणा॥ श्रो
र रक्षो श्राव के वृक्षो के पेडो के उपर
जडीयां बाधणी॥ ऊक का स्नान पूजन
करा कर के फेर एक वृक्ष के स्कंध
के समीप जो पत्र हो पते हैं तिह मे एक
एवं प्रकल्प करणी की कल्पना करके
हेम सूच्या हेम की सूवर्ण की शलाका क
रके कर्णवेधन करे॥ फेर स्कंध यास
पर देशो स्कंध के उपरि भाग के विषे
चार स्थान प्रकल्प सीसे रंग का श्रंजन सू
वर्ण की शलाका करके श्रंजन पावे॥
गुग्गल का धूप देवे॥ पुष्पमाला पहरावणी॥

वद्यंति वेदगनीजं तिकं एं प्रिय षंसखा षंपरि
बस्वज्ञानीयोषु शितो वितती धयो धन्वे ज्यादप षं सप
मे पारधानि इति मंत्रेणा नाम करीये॥

फेर सभव द्वतों की प्राप्ती करणा ॥ सर्वे
भ्यो व द्वेभ्यो नमः शाखा प्रशाखाऽधिष्ठात
देवेभ्यो नमः ॥ फेर वाग की दशों दि
शो मे खीर को १० वलीयां देणी फेर हव
नकुण्ड के पास दश दिक्पाल वलि दे
णी फेर जो दान शय्यादान छत्रपा
त्रदान अन्नदान और अनेक प्रकार के
दान यथाशक्ति देणे ॥ फेर जप की हवन
की दक्षिणा का संकल्प ॥ फेर ॥ पूर्णाहुति
देणी ॥ फेर न्याय प्रकरण ॥ फेर अभिषे
क करणा तिलक आशीर्वाद देणा ॥ इसा
म प्रति ष्ठा समाप्ता ॥ ॐ मह वातु श्री
वाग के माली का पूजन करणा इनाम देणा ॥
कूप के वाग के ४ दरवाजे वणाणा ठौर
पूर्व दक्षिण पश्चिम उतर ॥ वा सर्व मंड
प सर्वतोभद्र मंडप के ४ चार द्वार केले
कदली स्तंभ ४ द्वार चार कलश नालीय
र चांदणी वंदरवाल झंडीयां लगावणी
~~४ वा ? सर्वभवाडी यां दशों दिशो मे~~
~~झंडी उह कडी यो के चारी तरफ~~
~~बांस और~~ पताका झंडीयां दशों दिशों मे ल
गावणी ॥ १ [illegible] ध्वजा सर्वतोभद्र

ब्राह्मणों के वरण का संकल्प ॥ अपावे
त्रेति पठित्वा ॥ देशकालौ संकीर्त्य अमु
कगोत्रोहं अमुकशर्माहं होतं वा कुर्वेऽ
स्मिन् आरम्भेऽस्मिन् देवकाले शान्ति
द्वारा आयुः श्रीसर्वफलाद्व्यश्च सर्व
कामः ईश्वरप्रीतिकामो वा कर्तव्य श्री
ब्रह्मगायत्री गणेशगायत्रीवरण
मंत्र वा अमुमंत्राणं सपादलक्ष वा सा
र्द्ध षष्टिसहस्रसंख्याख्य जप वा स
पादेक त्रिंशत्सहस्र संख्याख्य ज
पं कारयितुं एभिः आसनकमण्ड
लुसाटिका उपानज पस्थ लोडोरि
का चौत पूगीफलादिभिः अमुक र
गोत्रान् अमुकर संख्याकान् ब्राह्म
णान् अहं वर्णविभागत्वेनऽहं वृ
णे ॥१॥ वरणं कृत्वा जप संकल्पं कु॰
र्यात् पूर्ववदुक्त्वा सपादलक्ष संख्याख्य
जपं ब्राह्मणद्वारा ऽहं कारयिष्ये ॥
ततः प्रार्थना कुर्यात् ॥ अमम्मस्यात् ॥

यजमानस्य रक्षा बंध
[illegible] ॥ ॥
[illegible]

हवन कर्त्ता ब्राह्मणों के वरण का संक
ल्प ।। देशकालौ संकीर्त्य अमुक गो
त्रो हं अमुक शर्मा हं पौत्र हं वा कूप
ऽस्मिन् प्रारम्भे गति नू देव कैलासा
नि ध्यार्थं आपः श्री सर्व फलादाप्य
सुखकामः ईश्वर प्रीति कामो वा श्रीव्र
ल गायत्री गणेश गायत्री वरुण मंत्र
वारुण मंत्राणां सपाद लक्ष संख्या ख्य
जप [illegible] नीत दशांश हवन तद्दशां
श तर्पण तद्दशांश मार्जन कर
णार्थं एभ ऊर्ध्व काव्रात पूगी फला
दिभिः अमुक गोत्रान् अमुक अ
मुक संख्याकान् ब्राह्मणान् अ
हं वृणे ।। अथ चरु संकल्पः सर्वं
पूर्ववद् उक्त्वा अनेन चरुणा ब्राह्म
णा द्वारा हं कारयिष्ये ।।१।। हवन
पद्धति संकल्प ।। कूप प्रतिष्ठा ह
वन कर्मणः प्रतिष्ठार्थं ग्रहादी
[illegible]

ब्राह्मणैः केजपको दक्षिणा का संकल्पः ॥ ५
अमुक गोत्रोऽहं अमुक शर्मा हं पुत्र पौत्र वा ब्रा
ह्मण द्वारा कारिता श्री ब्रह्मणग
पती गणेश गणपती वरुण मंत्र वा सू
मंत्राणां सपाद लक्ष वा सार्द्ध द्विषष्ठी
सहस्त्र वा सपादैक त्रिंशत्सहस्त्र
संख्यात्मक जपानां सांगता सिद्ध्यर्थं
इदं दक्षिणा द्रव्यं रजतमयं चंद्र दैव
तं यथा नाम गोत्रेभ्यो ब्रा० ॥ कर्मको द
क्षिणा संकल्पः ॥ अमुक गोत्रोऽहं अ
मुक शर्मा हं पुत्र पौत्र वा कूप यज्ञ कर्म
णः वा आराम यज्ञ कर्मणः प्रति
ष्ठा सांगता सिद्ध्यर्थं इदं रजतं
चंद्र दैवतं यथा नाम गोत्राय ब्राह्म
णाय दातुमहमुत्सृजे ॥ अमुक
पातु श्री कृष्ण यादव भीर सू संव
त् १९६० अमुक पौष सुदी ५ अमुक

गी तुका-भाट्टी मंडली चनकी हरि दास महदी सरवास
की सेर ५९

कूप प्रतिष्ठा सामग्री ॥ प्रथम वरुण
सामग्री ॥ लोटे ४ धोति ४ आसन ५
गोमुखी माला ५॥ साफे ४ पवीत्री ४
१ नाली धर चार गिहरा सुरसुवटुल ॥
नाड़ले डोरि के ४ कलश तांबे का १ ॥ काम टिका
केशर कपूर धूप प्रष्प गंध कुंकुम स
संतों वेर
की बांधी ॥ सपारी १० कुशा पते पुष्प
आम्र की टाहनी रेता दूर्वा प्रष्प
पत्र १ पसो ॥ रुपट के ॥ चंदन गरी ४
स्वेत ६) रुप ये वरुण के केशोरे [illegible] दी जनेऊ ४
जजमान
पक १ रुई घृत ॥ पी प्रथम मर्दिन सा
मग्री है ॥ नांदीमुख आदु की साम
ग्री आदु मे ही लिखि हुई है ॥ हवन दि
न प्रतिष्ठा के दिन की सामग्री लिख
ते है ॥ सपाद लक्ष के जपके हवनमेक
जौ जौ
तोर १० सेर तिल का १० सेर पवके ५ से
र चावल [illegible] सेर घी ॥ ७ ॥ सेर शर्करा मनो
सा के द ॥ के जप मे १० सेर तिल ५ सेर पव २॥ सेर चावल ६ सेर
घृत ३॥ सेर शाकर ॥ सवा ३॥ सहस्त्र के जप मे ५ सेर तिल २॥ से
पव सवा २। सेर चावल ॥ ३ सेर घृत ॥ पाव सेर शाकर प्र [illegible] सम
का को तोते लिखा है ॥

कुंग्रह ताम्र मुद्रा [illegible] सरकारी २ | १ बांस दट ध्वजा २ गज कपड़े की रकमी सर्पाकार ४ | सप्तपरिध ५ सतावर

१ इंदु पूर्व भोजपत्र मे गाड का धूप ॥ पान २५ पं
चरंग ॥ १२ माटि सुत की पीली रंगराणि ॥ १ ते
षा तांवेका ॥ पंचरत्न ॥ १ ॥ स्वर्ण की मूर्ति:
(वास्तु मंडल के)
नग १ वासुकी ॥ १ कलश लोटा तांवे का ॥ २ प्र
ष्ट नाग स्वर्ण के ॥ ८ ॥ शिशुमार लोहे के शि
शुमार नाम चक्र का है ॥ ८ ॥ करने ॥ ताम्र
के मिंडक ८ करने ॥ चांदी के मत्स्य ८
करने ॥ कूर्म कछुवे ८ स्वर्ण के कर
ने ॥ जो कमार्ग्ग जीव जंतु लोहे के क
रने नग २० ॥ मकर नाम नक्र का है
नग ३ लोहे के करने ॥ स[illegible] तो भद्र मं
डलापे वस्त्र श्वेत १ । गज चौडा १ । गज
लंबा ॥ वास्तु मंडलार्थ वस्त्र श्वेत १२ गि
रा लंबा चौडा ॥ नवग्रह मंडलार्थ व
स्त्र श्वेत १२ गिरा लंबा चौडा ॥ १६ के
ले [illegible] नाली पर रत्न ॥ ३ चांदनी वंदो वेन ॥ १२ स्त
म्भे की ॥ २५ झंडी पांच [illegible] सभा
त श्वेत ५ रक्त ५ हरित ५ पीत ५ कृष्ण ५
कलश १ बांस की ध्वजा उसका वस्त्र रक्त पीत
करना ॥ १ [illegible] संभ [illegible] का लंबा

[illegible] की चार [illegible] ॥ ४ [illegible]

[illegible]

बाद जमान प्रमाण कूप लक्षण करना २ वा ३ हाथ का करना

पीपल का बाग नर का करना रखण
मे स्थापन करना॥ वंदरवाल ग्रांवकी॥
८ कडीयां दरवाजे वधाने के वास्ते दरवा
जे ४ करने॥ कटोरा धूपपात्र का १ घडे ४
~~... कलस हजार ... का कले~~
~~... १~~ कूपाच्छादन
वस्त्र श्वेत जिससे सारा कूप ढका
जावे॥ तीर्थों का जल कुरुक्षेत्र का
गंगा यमुना सरस्वती जल॥ कूपज
ल १ कूपों का जल॥ पंचगव्य पंचा
मृत॥ दूध घी दही सहत कुशाप
ते ७ पत्र सेता॥ सामिधा प्रक पाला
शादि॥ १०८ समिधा जलकी
१०८ पीपल की॥ मेखा १० चोमे १०
पीठी उडद की पाव सेर वा (लीयो केवा) १००८ के॥ पी
ली की प्रस्था प्र द्वनाम वा १० की प्रस्थ
द्वनाम पिरोनित को शय्या देसी॥ जो
१ तर्पण॥ प्रायश्चित को दीदे देसी॥

१ मृत्तिका जोगजशाला सीजतीरथ वंबीगञ्जकी | उप ... दीक्षत का ती १ ५ पं ... वा ... | सर्वौषधी करणी गम्भीर सतावर | लेचा ...

चार जते बेभ सू हो र १८ से स्या रे कूप को स्थान करावेन के वा सो ४ घडे होने चाहिए येस माहिए जैसे उ पुर है मे० प. २२ प सहित समेत घडेसु ल भरे २२ हो

॥ एकाद्वित्रिचतुर्भागाःश्री घाज्यपयवकापपपाः ॥ यह वीरो

पंडित गरु को प्राप्त्या गौ प्रसाप्रद
क्षिणा देणी ॥ यह कूप प्रतिष्ठा की
सामग्री है ॥ आराम प्रतिष्ठा मै ॥
वी सामग्री तो यही है और कुछ
विशेष वी है ॥ कशोर ८५ वूगड
१०० स॰ वैं पधी वा ॥ सूवर्ण की शलाका १
अंजनार्थ ॥ सूवर्ण की सूचि सद् १
कर्ण वेधार्थ ॥ १ मूर्ति सुवर्ण की ६ मा. काप
पीत वस्त्र १ गज रेशमी १ लोटा तां श्रीति
वे का ॥ १ पान खासे का ॥ पुष्पमाला
५०८ के और १ सेर आलमगिरी १ सू
तकी आदि वंदरवाल यह सामग्री है और
जुआ महपातु श्री ज्ञान पात और ॥
सतनजा २० सेर वदो के नीचे
रखा जा सु ॥ यह आराम सामग्री है ॥
कि याने मंडु का ऽसिल रतिकूप क्रपावे ॥
वेनका रथा रहे है ॥

कूप प्रतिष्ठा मे पत्र ४ मंत्र जपणो
भैलि गायत्री गणेश गायत्री
वरुण मंत्र वास्तु मंत्र पत्र ज
पणो ॥ १ आराम प्रतिष्ठा मे पत्र ३ मं
त्र जपणो भैल गायत्री इंद्र का मं
त्र ध्यातार मिन्द्र पत्र मंत्र ॥ २ धोरवं
वरुण का मंत्र पत्र ३ जपणो ॥ इंद्र
का मंत्र ~~उमसदीनी~~ पद्धति मे पत्र
पद्धपरवी लि. है ॥
३७ पर है ॥ वास्तु का मंत्र वास्तु
शांति प्रयोग पद्धति मे पत्र १०५
रलि रवा है ॥ वरुण का मंत्र वरुणस्यो
त्तंभमनन पत्र है ॥ भैरव गायत्री पत्र है
ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि
तन्नो गजमुख प्रचोदयात् ॥ ॥

वास्तुका मन्त्र पढ़ै "ॐ वास्तो
ष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावे
शो ऽनमीवो भवानः। यत्वे
महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो
भवद्विपदे शं चतुष्पदे ॥१॥ इन्द्र कामं
त्र पढ़ै॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमविता
रमिन्द्रं हवे हवे सुहवं शूर
मिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं
स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥ इति इन्द्रः।

बच्चे के १० संस्कार करणे भी लिखे है "य
ह दश संस्कार दश कर्म पद्धति से करादे
ते॥ अथ प्रयोगः॥ दश संस्कार यह है॥
गर्भाधानं १ पुंसवनम् २ सीमन्तोन्नयनम्
३ जातकर्म ४ नामकर्म ५ निष्क्रमणम् ६
अन्नप्राशनम् ७ चूडाकर्म ८ कर्णवेध ९
उपनयन १० यह दश संस्कार है॥ ॥ अथ

इन्द्र की कथा प्रमाण [illegible] १० का एक कर्णवेध ९

१ तांबे का १ [illegible] १ कटोरा का शीकाश्री पात्र का
वासुमंडप के ऊपर तांबे का घरुआ
कूपप्रति ब्राह्मण ॥ प्रथम दिन को और शांति दिन को ॥

४ लोटे ✓ २५ सुपारी ॥ इंद्र यव भोजपत्र
४ धोती
४ आसन
४ गोमुखी
४ माला
४ साफे
४ पवीत्री
१८ कलश फूल
[illegible]
नालीयर १८
२ गज टल सरसे
८ नालेरी के
१ कुंकु २ छटांक हलदी
१ महदी पीसी हुई
१ सरवारी
१ केशर
१ कपूर

१ धूप प गटीयां चंदन स्वेत १ मेवा
१ सर्वौषधी के
वासतावर हेपसे की
१ सेर आटा गिहूं की
रूई एक गांठ कोरी
आन खा सेर्भ
१८ गज पीत रक्त कृष्ण हरित श्वेत
३ सेर चावल मंडल बोर
२ चांदनी पांडाल मंड लों की
२५ जडीयां रक्त पीत श्वेत हरित कृष्ण
१ ध्वजा बांस की उसका वस्त्र पीत करना सबसे ऊंचे कसमे पसारा को
१ गज वस्त्र पीत र[illegible]
वासु की के ऊपर १ तांबे के मिंडक ८

कलश कूल सारे २२ होने चाहिये

10

कूपाच्छादन वस्त्र श्वेत जिससे सारा कूप ढक जावे मसी चदर २ पाट की करनी उसी थान में से हो जाय
१ आठी सूत की पीली रंग लेनी कूप के चारों
१ मूर्ती वासुकी स्वर्ण की सर्पाकार करनी १ मूर्ती विष्णु की स्वर्ण की १ चांदी की लक्ष्मी की [illegible] करनी
१ पंचरत्ना कूप में जरा
१ ब्रह्म नाग स्वर्ण का
चांदी के मत्स्य ८

८ कपूर्वे स्रू वर्ण के

२० जौक लाहेकी
करनी

२ त्रा कुला हे के

१ पू पसांभ पीपल ॥
पाज लारका के २

त्रा ६ हा पका वापज
पानप्रमा सांक रनाइस
नमस्थापन करना

८ लाठि सर्वतोभद्र वालु
के वाल

८ कडीयां दरिवाजे [redacted] के
६ करने कु [redacted]

[redacted] केले
कदली स्तंभ

१५ ... ८ पड़ली के ८ छुर के
वंदर वाल ३ पांव की
प्रभा की वी करनी

कुरुक्षेत्र का जल
गंगाजल यमनाज
ल सरस्वती जल कूप
१ का जल सप्तमृत्तिका १ सर्वोषधी

पंचगव्य पंचामृत दुग्ध
थी दधि सहत जा मूत्र गोमय

कुशा पत पुष्प रतो धोत

३ सेर चावल रंगाराघ
वैत मडे का वासन
पूर्के वास्ते ... रंगाई

वैतकानवकाके मडल कहगाए ...
न का वी करनी

१०८ समिध
ग हैर की

१०८ पीपल की

९ नवग्रहों की स
मिध १ मर्क १
पलाश २ खैर ३
ऊंगा ४ ग लर ५
पीपल ६ जोडी ७
कुशा ८ दूर्वा ९

उड़द की दाल २ छटांक
वलीपातर के ...

१००२ क वा ५० टके

१० मेवा १० चौमे वडे ...
घोड़े
सेपादल हाहवनम

२० सेर का शतिल

१० सेर यव कच्चे

५ सेर चावल कच्चे

५॥ सेर शर्करा कच्ची

८ सेर घी कच्ची

यह हे इसीप्र
मारासे ६ ३॥ सेर
सब मे जाते है ना
२ ... सब मेजा

... मलाय

सर्वतोभद्र ... के कागारे
... करना ३ पडी के वाचौकी
... करनी ... के वास्ते पर

---

१ और एकादि त्रि चतुर्भजा त्री हाजपव काश्प
पा॥ इस वाकासे वी हवन बहुत जगे पर करते है
२ सेर तिल कच्चे १५ सेर यव ५ सेर चावल १ सेर
घृत शक्कर ३ च पपास्द वी पुष्ट

वास्तु मंत्रवी जपणा

आरम्भ प्रतिष्ठा में ३ मंत्र जपणो व लग्न पत्री १६
व १ वरुण का मंत्र १ जप ह वन यथाशक्ति क
ब्राह्मण भोजन छाया पात्र गो वा दक्षिणा दे.

आरम्भ में होतो सर्वतोभद्र और वास्तु
और मूमि सारी से राज स ह्यो का ज्ञान को
पडीओं के करावने चाहिये १ गज लं
वे चौडि करनी (पडीऊपरकी) उसके ऊपर खासा १ गज
बोल लंबा श्वेत वस्त्र वा चौमे गाड देणे फेर
पावल तणु कार के सर्वतोभद्र आदि मंडल करणो ॥
इसी तरह से वास्तु मंडप का करना मंडप
की ऊपर की पडडी १२ वारी छोहरा की लंबी
चौडी होनी चाहिये १२ छोहरा खासा वस्त्र वण
रह वास्तु मंडप सर्वतोभद्र से होता है ॥ जो प न
हुम राड पडडीओ के न ही करे तो १ गज की लं
बी चौडी चौकी करा कर के उस के ऊपर स
र्वतोभद्र कर लेना और १ गज की लंबी चौडी
चौकी पर वास्तु मंडप करना यह वी न होतो पट्टे
ऊपर करते वे यह वी न होतो रेत के करलेने

जलसु

१० में खा १० नाम के |
छोटी और ॥

कुछ वी नहीं करतो नवग्र
ह मंडल रतै का और हवन स
उत्तर तके कर लेना कुल

चौ केनी चे के क्षार ओग मंडप हीर खरी वाक्ति है ४ ५५
वी १५

८ कथवेस ...ज की प्रतिष्ठा साधारण करवनो।
२० जोक ८ वृक्षों के नीचे एक एक कशोरा जल का भर के रखे उनमें १एक एक ताम्बा
एक एक पैसा ओ हो गंध पुष्प ओर कर रखवा
देओ ओर प्रथम पंचगव्य से सभ को स्नान कराना
देना फेर सर्वोषधी मिश्रित जल से स्नान करा देना ॥ १० दश संस्कार वी करा देना
गर्भाधानादि १० वलिया खीर की दे देनी
२ ओन के पेडों पर ४ झडी पीली बांधणी रक्त
पीत ओर बाग के चारों तरफ चार केले
खडे कर देणे ४ झंडी बाग के चारों कोणों
पर वी लगा देणी स्नान पूजन करा देना ओर
जप हवन करा देना जो दान बाद दीन
दे देनी बाग के चारों तरफ ताग पीला बांध देना
नवग्रह मंडप हवन का कुंड अलकर देणा ओर
विशेष मंडलादिक नहीं केर वे धागा पाठ करा
देना है तो उसका प्रधान हवन करा देना ब्राह्मण भोजन
न करा देना ॥ दो वृक्षों पर सभ विधी करा देनी ओर
पर स्नान पूजन सूक्ष्म से करा देना ॥ वृक्षतीव
वृक्ष का अर्थ है ॥ दश संस्कार वी करा देने
जंजीन ॥ कर्णवेध गर्भाधानादि सभ करा देने

आराम बाग की प्रतिष्ठा की सामग्री प

प्रथम वरण सामग्री

१ कलश मट्टी का
१ नारीयल फूल ४ जो
हराकुशा सरस्व २ गजट ल
तोड़ लेनी सेर
४ नाले गोरि के
कुंकुम हल्दी १ छटांक
महदी १ छटांक सर
वारी
॥ केशर कपूर ६ द्रपव ॥
भोजपत्र ॥
॥ धूप सर्वौषधी मेवा
सतावर १५ सुपारी
२ आलणों के वरण के
वास्ते
४ लोटे बीगटी पे
४ धोति ४ आसन
१ साफे ४ पावसेर माटी
४ जामरवी गेरु का
४ माला २ पान
४ पवित्री
४ श्वेत चंदन

बड़ा कब्बा
तरफ की ईसा
ताजा गुधा

१० प्राति स्नू
पीली रंग ले
सर्वतोभद्र
वास्तु मंडल म
ईन के वास्ते
चावल
२ सेर रंग और
सो मंडलों के दोनों के वास्ते बांध
के वास्ते की १ ... एक एक वलों
६ के वास्ते सम काम
के १ थान खासे का
ले लेणा

कशोरे ४५ कूण्डे १००

१० कलश घड़े १० नारी यल
१६ केले २ चांदनी
१ जीतन वस्त्र चाहीये उत
ने ही एक एक वलार के
वस्त्र ३ ठावने चाहिये

जल मुल सर्वौषधी से स्नान
दोनों को स्नान करावना
पंचगव्य से भी करा ना

चौकेने

८ कपवेस बात बांधणी आंवकी

२० चौंकी बीच दरवाल को धती

तोरण ८ कडी पां दरवाजे करने वा गनो ८
डेलिकाके
१६ गडी पां ८ मंडलों को ८ दरवाजे को
२ तश्वेत पीत
२ रक्त कृष्ण

१ ऋतीं सूत्र गो की यथाशक्ति करो वी ६ मासे की कर गी स्नाप कृ
पिले

१ शलाका शलाई में जेना ध स्त वर्ग की यथाशक्ति

८ रती की स्ने ची सूई करणी वेधा पे

१ गज पीत वस्त्र

१ तोटा तांवे का वा जु मंडल पत्थर

१० वलि पां खीर की देणी वो आ के चव पल कृत दशादिक पालों की

समवेदी चौंको पंचगव्य से स्नान करावणे

पंचगव्य दुध घी दधि गोमूत्र गोमय पहें पंचामृत दुध घी दधि मधु खाण्ड शरकरा यह पंचामृत है

२० सेर सत नजा समवे चौं के नीचे जरूरत चाहिये

१ कोस की धूजा स वे सम दके पास

५०८ के वा २०८ के हवन करणे के वास्ते बरु का तो ते एक छिने चौं भ जा ई स वा यसे

२० सेर तील कच्चे

१५ सेर पत्र कच्चे

५ सेर चावल कच्चे

१ सेर घी कच्चा

शकर साच यथास्वी ति० है यह समके चौं तो लदे ॥

२ सेर तील ऽ १० सेर पत्र ५